''औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।''

इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

(पिछले शुमारे से आगे)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

9– औरत कोई चीज़ ही नही बल्कि कुर्आनी आयतों के लिहाज़ से एक ऐसा व्यक्तत्व है जो बुद्धि और इरादे वाली है और सृष्टि की मोती है। उसमें इन्सानी और ख़ुदाई अच्छाईयाँ और विशेषताएँ हैं

10– औरत सेक्स की मूर्ति नहीं बल्कि मर्द की साथी, साझी, संगनी है। मानव जाति के बाक़ी रहने का कारण है। आधे जीवन को यही बनाती है। पाक नियत से उससे शादी करना इबादत है उससे अच्छा बर्ताव करने से आख़िरत का सामान और इन्सान के आख़िरत वाली जीवन की सलामती का कारण है। कुर्आन मजीद में है:

''तुम्हारी बीवियाँ (जैसे) तुम्हारी खेती हैं। तुम अपनी खेती में जिस तरह आओ और अपनी आगे की भलाई के लिए (अच्छे कर्म) पहले से भेजो और ख़ुदा से डरते रहो और यह भी समझ रखो कि (एक न एक दिन) तुमको ख़ुदा के सामने जाना है और (ऐ रसूल!) ईमान वालों को खुशख़बरी दे दो।''

यहाँ आयत में हर्स (खेती) आया है जिस से मानव समाज में औरत की ज़रूरत को समझाया जा रहा है। औरत सेक्स की प्यास बुझाने के लिए नहीं है बल्कि मानव जाति के जीवन की रखवाली का पाक साधन है।

यह बात उन लोगों को होशियार करती है जो यह कहते हैं कि औरत एक खिलौना है और सेक्स की प्यास बुझाने का साधन है।

'वक़द्दमु लिअन्फ़ुसिकुम' औरत के पास रहकर अपनी आख़िरत के लिए सामान भेजो। यह उस सच्चाई की ओर इशारा है कि औरत के पास रहना सिर्फ मज़ा (भोग) लूटने के लिए नहीं बल्कि मोमिन लोगों को चाहिए कि उससे शरीफ शिष्ट बच्चों को पालने में उपयोग करें। इस तरह पाक कुर्आन ज़ोर देता है कि जीवन साथी चुनने में उन उसूलों का पास लिहाज़ किया जाए जिनके नतीजे में नेक भले बच्चों की तरबियत है और इन्सानी और समाजी पूँजी का जमा करना है।

चूँकि आयत के शुरु में सेक्स मिलन की बात है जो बड़ी महत्व की है और इसका सम्बन्ध सेक्स की प्राकृतिक चाह से है यहाँ इन्सान को 'वत्तकुल्लाह' (और अल्लाह का डरो) से सेक्स में सोच विचार और ख़ुदा के क़ानून पर ध्यान देने की बात है फिर आयत के आख़िर में है कि

इन्सान क़यामत के दिन ख़ुदा का सामना करेगा और अपने कामों का फल पायेगा तो मोमिनों को जिन्होंने अपनी धात्विक (materialistic) और रूहानी (spiritual) ज़िन्दगी के लिए फायदे वाली है जिन्होंने ख़ुदाई क़ानूनों को मान लिया था उन्हें अच्छी ख़बर दी गई है। कहा गया है 'वबश्शिरिल मोमिनीन' (और मोमिनों को अच्छी ख़बर दें)

प्यार के इस महान केन्द्र को इमाम जाफर सादिक़ (अ0) की एक रिवायत में इस तरह कहा गया हः

''जब हव्वा (अ0) पैदा हो गईं तो हज़रत आदम (अ0) ने ख़ुदा से विनती की कि ए अल्लाह यह सुन्दर जीती चीज़ क्या है जिसकें पास रहने और देखने से मेरा अकेलापन दूर हो जाता है और मेरे मन में चाह प्यार जाग उठता है। आवाज़ आईः ऐ आदम (अ0)! यह मेरी दासी है। क्या तुम यह चाहते हो तुम्हारी साथी बन जाए, तुमसे बातें किया करे और तुम्हारे सही जायज़ चाहतों को पूरा करे। उन्होंने कहा, 'हाँ'। आवाज़ आई कि जब तक तुम जीते हो इस मदद करने वाली पर जो मैंने तुम्हारे लिए ठहराई है मेरी हम्द (संस्तुति) करते रहो।''

जी हाँ, नेक औरत, वफ़ादार जीवन साथी का होना ख़ुदा की नेमत है। इस बहुमूल्य नेमत पर जीवन भर हम्द करना ज़रूरी है।

छटे इमाम फरमाते हैंः

''ज़्यादा भलाई औरतों में है।''

यह अजीब रिवायत है कि जो ज़्यादा भलाई का सोता औरत को ठहराती है। औरत से शादी करना आधा दीन (धर्म), उसके अधिकारों का ख़याल करना इबादत, उससे प्यार ख़ुदा की बात पर चलना, उससे नेक बच्चे का जन्म, आख़िरत की पूँजी, उसके लिए काम करना ख़ुदा की ख़ुशी का कारण है। रसूल (स0) माँ के बारे में फरमाते हैंः जन्नत माँ के पाँव में है। यही ज़्यादा नेकी है जिसकी ओर रसूल (स0) ने इशारा किया है। वे प्यारे जवान जो शादी करना चाहते हैं या कर चुके हैं और मोमिन मर्दों को ख़बरदार करता हूँ कि औरतों के बारे में उन ख़ुदाई अधिकारों का ख़याल रखे, उनके अधिकार बर्बाद करने से बचें और यह समझ लें कि उन्होंने किस बहुमूल्य मोती से अपने जीवन को क़ीमती बनाया है। वे लड़कियाँ जो शादी करना चाहती हैं या शादी कर चुकी हैं और बड़ी औरतों से विनती करता हूँ कि इन बातों को देखते हुए अपना मूल्य और मान पहचानें और अपने औरत होने पर ख़ुदा का शुक्र करें और क़ुर्आन की शिक्षा, रसूल (स0) और इमामों की हदीसों के अनुसार अपने पति के लिए योग्य और शिष्ट जीवन–साथी बनें। औरत होने और पति व बच्चों के मामले में पाक भावों से फायदा उठायें और अपने जीवन के सभी हिस्सों/विभागों में ख़ुदा के क़ानून का ख़याल रखें ताकि अच्छा घराना, शिष्ट भले पाक बच्चे और ख़ुशहाली का जीवन नसीब हो, इस तरह ख़ुदा की ख़ुशी पायें और चाल चलन से जीवन को पाक–साफ, मीठा और सुन्दर बना सकें।

(जारी)